NEW BOOK

व्यावहारिक गौ–पालन

लेखक

अरूण कुमार तोमर, विनीत भसीन और इन्दु देवी

भारत वर्ष की अर्थव्यवस्था में पशुधन का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि क्षेत्र के सकल घरेलु उत्पादन में पशुधन लगभग 26 प्रतिशत योगदान देने के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के 70 प्रतिशत घरों में जीविका का साधन भी है। पिछले दशकों में वैज्ञानिकों एवं पशुपालकों के अथक प्रयास से भारत दूध की अत्यधिक कमी वाले देश से बढ़कर दुनिया में सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाला देश बना है। निरंतर जनसँख्या के बढ़ते दबाव व दूध उत्पादों की दुनिया भर में बढ़ती मांग के अवसरों के कारण डेरी एक व्यावसायिक उद्द्यम के तौर पर तेजी से उभर रहा है जिसमे गौ–पालन प्रमुख है। भारत में लगभग 53 करोड़ पशु हैं जिनमें से लगभग 20 करोड़ गायें है। हमारे देश में गाय एक बहुपयोगी पशु है जिसको माता के सामान दर्जा दिया गया है। भारतीय संस्कृति का प्रतीक होने के साथ–साथ गाय को भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। विश्व की कुल गोवंशीय पशुओं की संख्या में से लगभग 13 प्रतिशत अकेले हमारे देश में है। हालाँकि भारत दुग्ध उत्पादन में विश्व में पहले स्थान पर है परन्तु प्रति पशु उत्पादन अभी भी अग्रणी देशों की तुलना में काफी कम है। देश में उपलब्ध लगभग 7 करोड़ प्रजनन योग्य गायों में दूध उत्पादकता बढ़ाने की अपार सम्भावनाएं हैं। देश में पशुपालन की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में हो रहे अनुसन्धान व प्रयोगों के परिणाम एवं तकनीक पशुपालकों तक पहुँचाना अनिवार्य है।

वर्तमान में गौपालन से सम्बन्धित व्यावहारिक, सरल भाष्य एवं संगृहीत पाठ्य सामग्री की कमी है। इन्हीं विषयों को ध्यान में रखकर "व्यावहारिक गौ–पालन" पुस्तक को हिंदी में लिखा गया है ताकि किसानों को उपयोगी वैज्ञानिक ज्ञान सरल व आसान भाषा में उपलब्ध हो। इस पुस्तक को लिखने में पहले से उपलब्ध डेरी पशुओं से सम्बंधित जानकारी का उपयोग व सन्दर्भ लिया गया है, जैसे हिंदी पत्रिका सुरभि (केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ द्वारा प्रकाशित) एवं अन्य से नवीनतम, व्यावहारिक व उपयोगी जानकारी तथा तथ्य लिए गए हैं। इस पुस्तक में भारतीय गायों की महत्ता, प्रमुख नस्लें, समस्याएं, प्रबंधन, आहारीय व्यवस्था, नवजात बछड़ों की देखभाल, गायों की आवास योजना, स्वास्थ्य, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, परम्परागत प्राथमिक उपचार, अकाल के दौरान प्रबंधन तथा डेरी फार्म की स्थापना से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी सरल भाषा में लिखने का प्रयास किया है जिससे किसान उसको पढ़कर उपयोग कर सके। इस पुस्तक में गौपालकों द्वारा अक्सर पूछे जाने वाले सवाल भी शामिल किये गए हैं।

March, 2022 : ISBN : 978-81-953172-1-9
x+242 pp; Four Colour; Paper back

Price : ₹2780.00

For Orders Contact:

MPH
MALHOTRA PUBLISHING HOUSE
B-6, DSIDC Complex, Kirti Nagar,
New Delhi - 110 015, India
Tel.: 41420246; E-mail: vinay.malhotra@gmail.com
Web : www.mph.net.in

बीज आलू उत्पादन तकनीकः सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग

लेखकः आर. के. सिंह, जे. के. तिवारी, टी. बक्सेठ, एस. के. चक्रवर्ती, वी. भारद्वाज एवं एम. कुमार

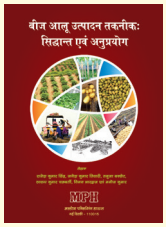

हमनें इस पुस्तक **"बीज आलू उत्पादन तकनीकः सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग"** का लेखन किया है जो कि भारत में विशेषकर किसानों के लिए बीज आलू के उत्पादन में सहायक सिद्ध हो सकती है। यह पुस्तक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान शिमला में किए जा रहे अनुसंधान पर आधारित है। इस पुस्तक में बीज आलू उत्पादन से संबंधित तकनीकों एवं अन्य विषयों का विवरण है जैसे कि आलू का एक परिचय, आनुवंशिक संसाधन, प्रजनन एवं किस्मों का विकास, आलू की किस्में एवं उनकी विशेषताएँ, बीज आलू उत्पादन के सिद्धान्त, पारंपरिक प्रणाली से बीज आलू उत्पादन, हाई–टेक प्रणाली से बीज आलू उत्पादन, एरोपोनिक प्रणाली से बीज़ आलू उत्पादन, सत्य बीज में आलू उत्पादन, आलू के रोग एवं उनका प्रबंधन, आलू के कीट एवं उनका प्रबंधन, आलू की खेती का मशीनीकरण, बीज आलू का प्रमाणीकरण, खुदाई उपरान्त कंद प्रबंधन भंडारण एवं बीज की आपूर्ति तथा विपणन।

इस पुस्तक के माध्यम से किसान भाइयों का आवाहन किया जाता है कि वे अपनी दूर–दर्शिता से समय को परखें और गुणवक्तायुक्त युक्त बीज आलू का उत्पादन करें जिससे की देश में आलू की उत्पादन बढ़ाया जा सके और उत्तम किस्मों का निर्यात एवं प्रसंस्करण में उपयोग को बढ़ाया जा सके। इसमें बीज आलू उत्पादन के सभी पहलुओं पर जानकारी देने का प्रयास किया गया है। आशा है यह पुस्तक न केवल किसानों बल्कि विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्त्ताओं तथा बीज आलू उत्पादन से जुड़े अन्य हितधारकों के लिए उपयोगी साबित होगी।

ISBN : 978-81-953172-0-2 ; x+200 pp; Four Colour; PB ; Price : ₹2200.00